ईरान द्वारा न्यूक्लयिर डील, 2015 का अनुपालन बरकरार : आईएईए (Iran Still in Compliance with 2015 Nuclear Deal : IAEA)

चर्चा में क्यों?

वयिना की अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) द्वारा जारी एक रपिोर्ट के अनुसार ईरान अभी भी परमाणु समझौते की शर्तों के अनुसार ही अपना परमाणु कार्यक्रम चला रहा है और उसने यूरेनयिम परमाणु भंडार की न्यून संवर्द्धन की सीमा को भी पार नहीं कयिा है। ईरान ने मुख्य शक्तयिों के साथ हुई न्यूक्लयिर डील, 2015 का अनुपालन करते हुए अपने परमाणु कार्यव्रम की सीमा, डील द्वारा अधरिोपति शर्तों की सीमा के अंदर ही बनाए रखी है।

महत्त्वपूर्ण बदिु

- यूनाइटेड स्टेट्स (US) द्वारा तेहरान के वरिुद्ध पुन: लगाए गए प्रतबिंधों के बावजूद, ईरान 2015 की न्यूक्लयिर डील द्वारा स्थापति न्यूक्लयिर प्रतबिंधों का पालन जारी रखे हुए है।
- ईरान के न्यून-संवर्द्धति यूरेनयिम (Low-enriched uraniun) की सीमा अभी भी 149.4 कग्रिा. है जो डील द्वारा तय 202.8 कग्रिा की सीमा के अंदर ही है।
- ईरान का भारी-जल (Heavy Water) भंडार अभी भी अपरविर्तति रहते हुए करीब 122.8 टन है। भारी जल एक कम संवेदनशील पदार्थ माना जाता है जसिे न्यूक्लयिर रएिक्टर में मंदक (Moderator) के तौर पर प्रयोग कयिा जाता है। परंतु यह डील के तहत अभी भी प्रतबिंधति है।
- हालाँकवितर्तमान में ईरान ने उत्पादन जारी रखा है परंतु इसमें से 1.7 टन इसने वदिशों में भेजा है, जबक1ि.5 टन का प्रयोग मेडकिल कंपाउंड्स बनाने में कयिा है।

क्या है न्यूक्लीयर डील, 2015?

- 2015 में बराक ओबामा प्रशासन के दौरान अमेरका, बर्टिन, रूस, चीन, फ्रांस और जर्मनी के साथ मलिकर ईरान ने परमाणु समझौता कयिा था।
- इस डील को ज्वाइंट कांप्रहिंसवि प्लान ऑफ एक्शन (JCPOA) नाम दयिा गया।
- इस डील के अनुसार, ईरान को संबंधति यूरेनयिम के भंडार में कमी लाते हुए अपने परमाणु संयंत्रों को नगिरानी के लयि खोलना था।
- इसके बदले ईरान पर आरोपति आर्थकि प्रतबिंधों में रयिायत दी गई थी।
- कुछ समय पहले अमेरकिी राष्ट्रपत ट्रिंप इस समझौते से यह कहते हुए अलग हो गए कईिरान चोरी-छपि अपने परमाणु कार्यक्रम को अभी भी जारी रखे हुए है। साथ ही उन्होंने ईरान पर तेल एवं बैंकगि संबंधी प्रतबिंध पुन: आरोपति कर दयिे।
- हालाँकइिस डील के अन्य हस्ताक्षरकर्त्ता देश जैसे- जर्मनी, बर्टिन, फ्रांस, रूस और चीन अभी भी इस डील को जारी रखे हुए हैं।
- वहीं, ईरान अभी भी इस डील से जुड़ा हुआ है क्योंकयिह डील कई अंतर्राष्ट्रीय प्रतबिंधों पर रोक लगाती है। लेकनि यह तभी होगा जब तीन यूरोपयिन शक्तयिाँ, रूस और चीन अपने व्यापार-लाभों को संरक्षति रखने के लयिे प्रतबिद्ध होंगी।
- अमेरका द्वारा प्रतबिंधों को पुन: बनाए रखने का मकसद ईरान के न्यूक्लयिर प्रोग्राम को कड़ी सीमाओं के अंतर्गत लाना और इसके द्वारा वकिसति कयिे जा रहे बैलस्टिकि मसिाइल को रोकना तथा मडिल-ईस्ट में होने वाले संघर्षों में प्रॉक्सी बलों को सहायता पहुँचाने से रोकना था।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/iran-still-in-compliance-with-2015-nuclear-deal-iaea